श्रमण २००३ ०७ (फोल्डर नं. ०२५०५०)

सम्पादक - डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
जैन धर्म की एतिहासिक विकास यात्रा – प्रो. सागरमल जैन ---------- १-५३
जैनयोग – एक दार्शनिक अनुशीलन – अनिल कुमार सोनकर ----------५४-६१
जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में वस्तु – स्वातन्त्र्य एवं द्रव्य की अवधारणा – कु.अल्पना जैन ------- ६२-७१
भगवती आराधना में समाधिमरण के तत्त्व – डॉ. सुधीर कुमार राय ---------- ७२-८०
वज्जालग्गं का काव्यात्मक मूल्य – रजनीश शुक्ल ---------- ८१-९३
पूर्वमध्यकाल में स्त्रियों की दशा (त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित के संदर्भ में) – डॉ. उमेश चन्द्र श्रीवास्तव ---------- ९४-९७
भारतीय कला को बुद्ध का अवदान – प्रो. अंगने लाल ---------- ९८-१०४
एलोरा की महावीर मूर्तियां – डॉ. आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव ---------- १०५-११०
खरतरगच्छ – बेगड शाखा का ईतिहास – शिवप्रसाद ---------- १११-१२३
Myth of Lord Mahavira's Embryo – Transfer in Jaina – Scriptures – Mangilal Bhutodia124-132
Religious Aspect of Non – violence – Dr. B. N. Sinha---------- 133-156
विधापीठ के प्रांगण में ---------- १५७
जैन जगत ---------- १५८-१६०
साहित्य सत्कार ---------- १६१-१६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org